



छत्तीसगढ़ लोक साहित्य के ढोली-ढाबा आय। साहित्य दू प्रकार के होथे—लिखे साहित्य अउ मुँहअँखरा साहित्य। मुँहअँखरा साहित्य ल लोक—साहित्य कहिथें। लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, जनौला, हाना ये जम्मो लोक—साहित्य आय, जेन ह लोक कंठ म मुँहअँखरा हवय।

हाना ल हिंदी म लोकोक्ति कहिथें। लोकोक्ति के मतलब हे लोक + उक्ति, माने लोक—मानस द्वारा कोनो घटना ल लेके कहे गै बात। इही लोकोक्ति ल छत्तीसगढ़ी म हाना कहिथें। हाना म लोक जीवन के अनुभव समाय रहिथे। हाना ह ज्ञान के भंडार आय। कोनो समस्या ल सुलझाय बर हाना ह बड़ काम के होथे। हमन देखथन के पढ़े — लिखे ले जादा गाँव के रहइया अप्पढ़ मनखे के गोठ—बात म खूबेच प्रभाव होथे, ओकर कारन आय हाना।

हाना ह सिखावन, अचार—बिचार, नीति—नियम के दरपन आय। एकर प्रयोग ले बोलइया के भाषा अउ भाव म चमत्कार के संगे—संग सुग्घर प्रभाव पैदा होथे अउ सुनइया ह घलो जल्दी प्रभावित होथे। कइसनो भी हाना होय, ओ ह कोनो—न—कोनो घटना ले जुड़े रहिथे। जइसे —

मही माँगे ल जाय, ठेकवा लुकाय।

सियान मन बताथें के एक झन माइलोगन ह परोस म मही माँगे ल जावय फेर का करय, बिचारी ह संकोच के मारे ठेकवा ल लुका लय। ये—ला घर के सियनहा ह देख डरिस अउ ओकर मुँह ले निकल परिस—मही माँगे ल जाय, ठेकवा लुकाय। अइसने एक ठन अउ हाना हे—

अध—जल गगरी, छलकत जाय ।

हमन देखथन के जेन गगरी ह आधा भरे रहिथे, ओ ला बोह के रेंगबे त ओ ह बहुतेच छलकथे। ये हमर रोज के अनुभव आय। अइसने देखे जाथे के जेखर ज्ञान ह कम रहिथे ओ ह अब्बड़ बोलथे। जीवन के कतेक सुग्घर अनुभव येमा समाय हे। हाना म ज्ञान के भंडार रहिथे। एला बोलइया अउ सुनइया ह समझ सकत हे।

हाना हमर छत्तीसगढ़ी भाषा के सिंगार आय। जेकर ले भाषा के सुग्घरइ, मिठास अउ प्रभाव बढ़थे। छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य म कतको हाना मुँहअँखरा बगरे हवय, जेन ल हमन बोल—चाल के भाषा म बउरथन।

छत्तीसगढ़ी हाना के गजब अकन विशेषता हे। जइसे नान्हेपन, लय, तुक के मिलान, सरलता, सहजता अउ मनोरंजन । जइसे —

धीर म खीर ।

साँच ल का आँच ।

उन के दून ।

ये हाना मन भले नान — नान दिखत हवँय, फेर, ईंकर प्रभाव लोक—जीवन म भारी देखउल देथे। कतकोन हाना तो कविता बरोबर लगथें। जइसे —

कलेवा में लाडू, नता में सादू ।
जाँगर चले न जँगरोटा ।
खाय बर गहूँ के रोटा ॥

हाना ह बड़ सहज अउ सरल होथे । येला बोले — गोठियाय म कउनो अड़चन नइ होवय । सरलता ह एकर विशेषता ये ।

खाय बर जरी, बताय बर बरी ।
मन म आन, मुँह म आन ।

छत्तीसगढ़ी म हाना ल कोनो—कोनो जघा भाँजरा कहे जाथे । हाना ल कहावत अउ लोकोक्ति घलो कहिथें । कुल मिलाके येला हाना कहव के भाँजरा कहव, येला कहावत कहव के लोकोक्ति, एकेच बात आय ।

अर्थ के आधार म हाना ल खाल्हे लिखाय ढंग ले बाँटे जा सकत हे —

1. ठउर संबंधी हाना — हर गाँव, शहर, नगर ठउर के अपन विशेषता होथे । ओकर अलगे चिन्हारी होथे । उहाँ के रहन—सहन के आधार म ओ ठउर के गुन—अवगुन होथे । उही गुन—अवगुन के आधार म हाना के चलन देखे ल मिलथे । जइसे —

छुईखदान के बस्ती, जय गोपाल के सस्ती ।

छुईखदान के राजा ह बैरागी रहिस अउ वो ह कृष्ण भगवान के भगत रहिस । उहाँ के रहइया मन आज ले आपस म 'जय गोपाल' कहिके जोहारथें । कहे के मतलब, जेन चीज जिंहा जादा होथे ओ ह सस्ती अउ प्रचलित हो जथे ।

रात भर गाड़ी जोते, कुकदा के कुकदा ।

अररभाँठा कुकदा गाँव जिहाँ कोनो गाड़ी वाले ह रातकन गाड़ी फाँदिस । गाड़ी ह रात भर भाँठा म घूमत रहिगे । एकर अर्थ हे के बिना सोचे—समझे मिहनत करे ले फल नइ मिलय ।

2. खेती संबंधी हाना — छत्तीसगढ़ म 80 प्रतिशत मनखे गाँव म रहिथें । इहाँ के प्रमुख काम खेती आय । छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान क्षेत्र आय । एला 'धान के कटोरा' घलो कहे जाथे । छत्तीसगढ़ी हाना म खेती—किसानी के गोठ—बात ह घलो समाय हे । जइसे —

महतारी के परसे अउ मघा के बरसे ।

महतारी के भोजन परसे ले जइसे लइका मन अघार्थे, वइसने मघा नक्षत्र के बरसा ले खेत—खार मन अघार्थे ।

कोरे गाँथे बेटी अउ नींदे—कोड़े खेती ।

मतलब हे, जइसे मूड़ी कोरे बेटी ह सुग्घर दिखथे, वइसने नींदे—कोड़े खेती सुग्घर दिखथे अउ जादा उपज देथे ।

3. पशु—पक्षी संबंधी हाना— पशु—पक्षी मन मनखे के संगवारी आय, तेकरे सेती ईंकर गुन अवगुन ह घलो हाना के विषय बन गे हे । जइसे —

दुधियारिन गाय के लात मीठ ।

जेकर से हम—ला काम रहिथे ओकर गुस्सा अउ मार ह घलो सुहाथे । एक ठन हाना हे

सींका के टूटती अउ बिलई के झपटती।

मतलब हे संजोग से कोई काम बन जाना।

4. प्रकृति संबंधी हाना — लोक—जीवन प्रकृति ले जुड़े रहित्हे अउ प्रकृति ह लोक ले। तेकरे सेती प्रकृति उपर घलो कोरी—कोरी हाना हे। जइसे —

संझा के पानी, बिहनिया के झगरा।

कोनो दिन जब संझा बेरा झड़ी शुरू हो जाथे त रात भर बंद नइ होवय, ठँउका वइसने जेन घर म बिहनिया बेरा झगरा शुरू हो जाथे त थमे ल नइ धरय।

हपटे बन के पथरा, फोरे घर के सील।

ये हाना के मतलब हे के दूसर के गुस्सा ल दूसर उपर उतारना।

5. अंग संबंधी हाना — मनखे के अंग संबंधी हाना घलो लोक—जीवन म सुने ल मिलथे। जइसे—

मूड़ के राहत ले, माड़ी म पागा नइ बँधाय।

एकर मतलब ये हे के सियान के रहत ले लइका के सियानी नइ चलय।

मूड़ ले बड़े पागा।

एकर मतलब हे कोनो जिनिस के महात्तम ल जरूरत ले जादा बताना।

6. घर—परिवार संबंधी हाना — हाना के विषय विविध हे। जेन म घर—परिवार, नता—रिश्ता के गोठ घलो समाय रथे। जइसे —

हँड़िया के मुँह ल परई म तोपे,

मनखे के मुँह ल कामा।

एकर सोज—सोज अर्थ हे, हर मनखे बोले बर सुतंत्र हे, निंदा करइया ल कोन रोक सकत हे।

चलनी म दूध दूहय, करम ल दोस देय।

एकर मतलब हे अंते—तंते के काम करना अउ अपन करम ल दोस देना।

7. नीति संबंधी हाना — जिनगी म नीति—नियम के बड़ महात्तम हे, ये नीति—नियम ह लोक—जीवन म देखे बर मिलथे। नीति संबंधी हाना ह जिनगी बर उपदेश के काम करथे। जइसे —

रिस खाय बुध, बुध खाय परान।

माने गुस्सा करे म बुद्धि सिरा जाथे अउ जब बुद्धि सिरा जाथे त मनखे परान ल घलो गँवा डारथे।

बोंय सोन जामय नहीं, मोती लुरे न डार,

गै समय बहुरय नहीं, खोजे मिले न उधार।

ये हाना म कतका सुग्घर नीति के गोठ लुकाय हे। सोन ल बो देबे त वो जामय नहीं, मोती ह कोनो डारा म फरय नहीं। माने, मनखे ल कुछ पाना हे त ओला मेहनत करना जरूरी हे। वइसने जेन समय ह नहक जाथे तेन ह लहुट के नइ आवय। न कोनो मेर खोजे म मिलय, न कहुँ उधार मिलय। कहे के मतलब हे के समय बड़ कीमती हे, हमला समय के बने उपयोग करना चाही। छत्तीसगढ़ी साहित्य म अतकेच नहीं, हाना के अउ कतकोन किसम हे। जइसे जात संबंधी हाना, समाज संबंधी हाना, धन—सिक्का संबंधी हाना, हाँसी—ठिठोली के हाना। एला हम ला अपन भाषा—व्यवहार म बऊरना चाही।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

हाना	=	लोकोक्ति	मुँहअँखरा	=	मौखिक
अप्पढ़	=	अनपढ़	ठेकवा	=	मिट्टी का बर्तन
माइलोगन	=	औरत	सुधर	=	सुंदर
गजब अकन	=	बहुत सारा	कलेवा	=	व्यंजन
जरी	=	एक प्रकार की भाजी , जिसकी जड़ें भी खाई जाती है	आन	=	दूसरा
कोरी	=	बीस की संख्या	ठउर	=	जगह
माड़ी	=	घुटना	मघा	=	एक नक्षत्र
सोझ	=	सीधा	संझा	=	शाम
रिस	=	गुस्सा	पागा	=	पगड़ी
अतकेच	=	इतना ही	अंते-अंते	=	इधर-उधर
			लहुटके	=	लौटकर
			बऊरना	=	प्रयोग करना

अभ्यास

पाठ से

- क — साहित्य के प्रकार के होथे ?
 ख — हिन्दी म हाना ल का कहिथे ?
 ग — हाना के प्रयोग ले भाषा म का-का प्रभाव पैदा होथे ?
 घ — 'अधजल गगरी,छलकत जाय' के का अर्थ हे ?
 ङ — छत्तीसगढ़ी म हाना ल अउ का नाव ले जाने जाथे ?
 च — विषय, भाव अउ —अर्थ के अधार म हाना ल के भाग म बाँटे जा सकत हे?

पाठ से आगे

- हाना के परयोग वाक्य में नई रहितीस त वाक्य में का कमी लगतीस बिचार कर लिखव।
- ये पाठ से बाहिर कोनो जगह हाना सुने होहु तेला सकेल के (दस ठन) लिखव।
- पाठ में दिहे छत्तीसगढ़ी हाना के हिन्दी लोकोक्ति अपन गुरुजी ला पूछ के लिखव।
- खाल्हे लिखाय हाना के भाव ला लिखव —
 अ — दुधियारिन गाय के लात मीठ।
 ब — कोरे गाँथे बेटी अउ नींदे कोड़े खेती।
 स — रिस खाय बुध,बुध खाय परान।
- 'जाँगर चले न जँगरोटा,खाय बर गहूँ के रोटा' हाना ल वाक्य में परयोग करहु तेला बिचार करके लिखव।



भाषा से

1. क — “दुहना” क्रिया आय। इही ढंग के पाठ म आय तीन ठन क्रिया शब्द ल खोजव अउ अपन वाक्य म परयोग करव।
 ख — खाल्हे लिखाय शब्द मन म ‘ना’ प्रत्यय जोड़ के नवा शब्द बनावव अउ वाक्य म परयोग करव —
 लहुट, तँउर, बऊर, बहुर ।
 2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के दो-दो ठन हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखव —
 मनखे, अप्पढ़, हाना, गुस्सा ।
 3. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव —
 सियान, संगवारी, नान-नान, बिहनिया ।
- हाना के हमर जिनगी म का महत्व हे ?
 ये विषय उपर दस वाक्य म अपन बिचार लिखव ।



योग्यता विस्तार

- ये पाठ म हाना ल जिनगी बर उपयोगी बताय गेहे। एखर ले हमर तन-मन निरमल बने रहिथे अउ चाल-चलन में सुधार घलो आथे। सहीच म हाना ले जीवन ल सुग्घर बनाय जा सकत हे। अपन बातचीत म अपन क्षेत्र म प्रचलित हाना के प्रयोग करव ।
- ये पाठ म आय जम्मो हाना ल याद करव ।



टीप :- पाठ म बहुत अकन हिंदी के शब्द ल जइसने के तइसने ले ले गे हे, जइसे — प्रभाव, विशेषता, अनुभव, भाषा आदि। आने पाठ म घलो कतकों, हिंदी अउ आन भाषा के शब्द मिलही। जउन-जउन जघा मानक शब्द मिलही उहाँ ठहर के थोरकीन सोचहू। एकर छत्तीसगढ़ी म कइसन उच्चारण अउ लिपि बनही।

